।। श्री विमलनाथ जिन पूजन ।।

रचियता – राजेश कासलीवाल, उज्जैन

स्थापना

(छंद रोला)

सम्यक रत्नत्रय धर भायी षोडश भावन ।
सर्व हितंकर पाया पद तीर्थंकर पावन ।
धर्म देशना धर्म चक्र का किया प्रवर्तन ।
हुआ अहो जयवंत जगत में श्री जिन शासन ।

(दोहा)

मेरे मन की वेदी पर, आओ विमल जिनेश ।
तिष्ठो प्रभु मम निकट रहो, हरो भवार्णव क्लेश ।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्नाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् परि पुष्पांजलि क्षिपेत ।

(छंद - मानव)

चिरमोह महामल दुखकर, और जन्म-मरण निरवारो ।
आया हूँ शरण तुम्हारी, संकट से नाथ उबारो ।
हे विमल अमल गुणधारी, तीर्थंकर जग हितकारी ।
केवल रवि जग परकाशे, रह निज में ही अविकारी ।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हित-अहित हेतु पर जाने, आकुल व्याकुलता पाई ।
यह ताप भवातप भारी, तुम दूर करो जिनराई ।
हे विमल अमल . . . .

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

संयोग सदा को चाहे, क्षणभर जिनका जीवन है ।
अक्षयपद अब दिखला दो, जो शाश्वत है निज धन है ।
हे विमल अमल . . . . .

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

निज ब्रह्मभाव को भूला, परगंध कुवास सुहाई ।
प्रभु कंटक काम निवारो, चिद् पुष्प सदा सुखदाई ।
हे विमल अमल . . . . . .

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पर से भिक्षा की इच्छा, यह क्षुधा मुधा का लक्षण ।
हर लो मुधभाव प्रभु यह, कैसे हो पर का भक्षण ।
हे विमल अमल . . . . . .

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासाद ज्ञानमय मेरा, पर मोह अंधेरा छाया ।
तम दूर करो यह जिनवर, तेरी शरणे हूँ आया ।
हे विमल अमल. . . . . .

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये मोह राग रुष सारे, चिद् आंगन दूषित करते ।
प्रभुवर तुम शरणागत को, चिन्मय सौरभ से भरते ।
हे विमल अमल. . . . . .

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय-अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्फल है व्याकुल कारी, पर-द्रव्य-भाव में क्रीड़ा ।
तुझ सम शिवफल प्रभु पाऊँ, हो दूर भवों की पीड़ा ।
हे विमल अमल . . . . . .

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

चिद् वैभव की सब व्यक्ति, चिन्मय में तन्मय तेरी ।
हो द्रव्य भाव गुण जैसी, अन-अर्घ्य परिणति मेरी ।
हे विमल अमल . . . . . .

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(धत्तानंद)

तीर्थंकर वंदें नित अभिनंदें, पद अरविंदे शीश धरें ।
पांचों कल्याणक समकित दायक, मोद बधायक भक्ति करें ।

पुष्पांजलि क्षिपेत्।

(छंद त्रोटक)

दशमी वदि ज्येष्ठ तजि सुरलोक, प्रभु पधरे जयश्याम सुकोख ।
लखे शुभ स्वप्न हरख उर धार, करे चरचा सुरबाल विचार ।
बरसते रत्न गगन से आय, नगर में मोद उछाह सुभाय ।
प्रभु त्रयरत्न हृदय में धार, अहो उर में निज आतम सार ।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णदशम्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि चार माघ हरषित धरती, अम्बर पातल मंगल करती ।
प्रभु जन्म लिये त्रयज्ञान हिये, हर्षित कम्पिल हर्षित जग ये ।
पांडुक पर शुभ अभिषेक करा, रचकर तांडव बहु मोद भरा ।
प्रभु रुप लखा पर मन न भरा, तब सुरपति नैन हजार करा ।

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतर रागादिक मेघ फटे, बाहिर लख जलधर को विघटे ।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिंतन, तन-मन-वाणी कर गुप्त मनन ।
लौकांतिक लोकांत गमन जाने, दीक्षा हित अनुमोदन ठाने ।
तुरि शुक्ल माघ वनवास लियो, जगवास तजि निजवास कियो ।

ॐ ह्रीं माघशुक्ल चतुर्थ्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छद्मस्थ-दशा-छिद ज्ञान-सकल, सब दोष तजे भज आत्म विमल ।
छठ माघ सुदी शठ घाति हने, अरि राग हनन अरिहंत बने ।
कमलासन धरम-सदन विचरें, अतिशय चौंतीस गगन बिखरे ।
उपदेश लेश बिन राग करे, बिन अक्षर सब निज भाष वरें ।

ॐ ह्रीं माघशुक्लषष्ठ्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहांत हुए रागांत हुए, शोकांत हुए लोकांत गए ।
सब योग तजे संयोग तजे, जगजोग तजे भवरोग तजे ।
सम्मेद चले भवभेद चले, निरखेद चले निरभेद चले ।
बुदि आठ अषाढ़ करम की बाढ़, दियो तुम काढ़ लियो निरवाण ।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्ण अष्टम्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

विमल हुए परमातमा, अमल आतमा जान ।
सब मल परिणति का मिटे, करता हूँ गुणगान ॥

(वीर छंद)

जय विमल विकार विवर्जित हो, हो वीतराग जिन केवल धर ।
जय धर्म तीर्थ करतार प्रभु, उपदेश दिव्य दाता हितकर ॥
जय ज्ञायक में ही लीन सदा, जो हेय सभी परभाव तजा ।
तुम चारगति तज पंचमगति, पाई निज पंचमभाव भजा ॥

जो चारभाव से सदा अगोचर, सकल कर्म उपाधि रहित ।
निरपेक्ष नियत निज में रहता, निर्भेद निखिल निजभाव सहित ॥
निर्द्वंद्व निरामय निर्भय नित, निर्दंड निराकुल निर्मम है ।
निर्दोष सदा निजगुण पूरित, आनंदमयी अंतरतम है ॥

नही है अप्रमत्त प्रमत्त नही, बस एक सदा जो ज्ञायक है ।
पर-द्रव्य-भाव से भिन्न उपासित, शुद्ध सदा सुख दायक है ॥
है भेदज्ञान से आविष्कृत, पर भेद नही जिसमें रहते ।
नही दर्शन ज्ञान चरित्र भेद, बस एक भाव जिनवर कहते ॥

रस रूप गंध से रहित शब्द से, व्यक्त नहीं, नहीं लिंग ग्रहे ।
निर्दिष्ट नहीं संस्थानों से, गुण चेतन मात्र त्रिकाल रहे ॥
अकल अविनाश अतिंद्रिय निर्मल, ज्यों विशुद्ध लोकाग्र रहे ।
त्यों ही सिद्ध समान जगत में, जीव पारिणामिक सब है ॥

निज में ही थिर परिणति तेरी, ध्रुव अचल अनुपम पूर्ण अरे ।
तुम कारण भी परमातम हो, परमात्म-कार्य संपूर्ण वरे ॥
हे देव बनो कारण मेरे, मेरी परिणति भी पावन हो ।
हो विमल विशुद्ध विहीन-दोष सब, तुम सम ही मनभावन हो ॥

(धत्तानंद छंद)

तीर्थंकर प्रभुवर हितकर दुखहर, भवतर शिवकर सुहित विभो ।
तुमको नित ध्यावें तुम गुण गावें, शिवसुख पावें शीघ्र प्रभो ।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

पंचम भाव निहारते, पंचम गति को पाय ।
आप हुए परमातमा, विमल महा सुखदाय ॥

पुष्पांजलि क्षिपेत्।